राज़-ए-हक़ीक़त

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

पुस्तक का नाम : **राज़–ए–हक़ीक़त**

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी

अनुवादक : अलीहसन एम.ए., एच.ए.

संख्या : 1000

प्रथम संस्करण, हिन्दी : मार्च 2013 ई.

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान-143516

मुद्रक : फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

Name of Book : **RAAZ-E-HAQIQAT**

Written by : Hazrath Mirza Ghulam Ahmad, Qadiani

Translated by : Ali Hasan M.A., H.A.

Copies : 1000

1st Edition Hindi : March 2013

Published by : Nazarat Nashr-o-Ishaat, Qadian-143516

Printed at : Fazle Umar Printing Press, Qadian

ISBN :978-81-7912-363-8

اے خدا اے چشمۂ نورِ ھُدیٰ
از کرم ہا چشم این اُمت کشا
یک نظر کن سوئے این رازِ نہاں
تا رہی اے طالب از وہم گماں

الحمد للہ والمنہ

کہ یہ رسالہ جس کا نام ہے

رازِ حقیقت

حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے صحیح اور سچے سوانح ظاہر کرتا ہے اور ہمارے مباہلہ کے متعلق
کئی نصیحتیں کر کے اصل غرض مباہلہ بتلاتا ہے

اور بمقام قادیان مطبع ضیاء الاسلام میں باہتمام حکیم فضل الدین صاحب
بھیروی مالک مطبع چھپا ہے اور بتاریخ
۳۰ رنومبر ۱۸۹۸ء
شایع ہوا

प्राक्कथन

राज़-ए-हक़ीक़त

इस्लाम के पुनरुत्थान हेतु सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने चौदहवीं शताब्दी हिजरी में हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी को मसीह मौऊद व महदी मअहूद बनाकर अवतरित किया और आपको इस युग में इस्लाम के आन्तरिक और बाह्य मतभेदों का न्यायक और सूलीभंजक बनाया। आपने खुदा के द्वारा दी गई शुभसूचनाओं और भविष्यवाणियों के अनुसार इस युग में अपनी कृतियों के द्वारा ईसाइयत की झूठी विचारधाराओं का खण्डन किया और अवतारों के बारे में पाई जाने वाली ग़लत भ्रान्तियों को दूर किया ।

यह रचना 30 नवम्बर 1898 ई. को प्रकाशित हुई । इसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन की सच्ची घटनाएँ कलमबद्ध की हैं और उनके सूली पर से ज़िन्दा उतारे जाने और कश्मीर की ओर आने के अतिरिक्त श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में उनकी क़ब्र मौजूद होने पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है । इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में सच्चाई पर आधारित ''मसीह हिन्दुस्तान में'' नामक एक और किताब की रचना की जो 1908 ई. में उर्दू भाषा में प्रकाशित हुई ।

इसके अतिरिक्त मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने अरबी विद्वान होने का सिक्का जमाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक अरबी इल्हाम ''अ'ताजिबु लि'अमरी'' पर जो यह एतराज़ किया था कि अ'ज'ब का

संबंधकारक लाम शब्द नहीं आता । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसका इस किताब में अत्यन्त ठोस और बुद्धिपरक उत्तर हदीसों और अरबी मुहावरों के साथ दिया है । जिससे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी की बड़ी शर्मिन्दगी हुई और झूठी विद्वता खुलकर सामने आ गई । इसके अतिरिक्त आपने इस किताब में मुबाहला के घोषणापत्र की वास्तविकता भी बयान की । जिसके कारण बटालवी ने आपके विरुद्ध सरकार के पास बहुत सी शिकायतें करके और झूठी खबरें पहुँचाकर भ्रांतियाँ पैदा करने की कोशिश की थी ।

प्रकाशन विभाग सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया पंचम की मंज़ूरी से इस किताब को पहली बार हिन्दी भाषा में अनुवाद करवाकर प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा है । इस किताब का हिन्दी भाषा में अनुवाद आदरणीय मौलवी अली हसन साहिब एम. ए. ने किया है । अल्लाह तआला उन्हें प्रतिफल प्रदान करे और इस किताब को पाठकों के लिए सन्मार्ग प्राप्ति का साधन बनाए । आमीन !

भवदीय

अध्यक्ष प्रकाशन विभाग

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

اے خدا اے چشمۂ نورِ ھُدیٰ
از کرم ہا چشم ایں اُمّت کشا
یک نظر کن سوئے ایں رازِ نہاں
تا رہی اے طالب از وہم و گمان

अनुवाद :- हे ख़ुदा ! हे सन्मार्ग के उद्‌गम ! कृपा करके इस उम्मत की आँखें खोल दे ।

हे सत्याभिलाषी ! तू इस छुपे हुए रहस्य* की ओर एक बार ध्यान दे ताकि तू भ्रम और शंकाओं से छुटकारा पाए ।

(अनुवादक)

यह किताब जिसका नाम है

राज़-ए-हक़ीक़त

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सही और सच्ची जीवनी प्रकट करती है और हमारे मुबाहला (एक-दूसरे को शाप देना) के बारे में कई नसीहतें करके मुबाहला के मूल उद्देश्य को बताती है ।

* छुपे हुए रहस्य से तात्पर्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी किताब राज़-ए-हक़ीक़त है - अनुवादक ।

घोषणा

दिसम्बर में छुट्टियों के दिनों में हमेशा जलसा होता था लेकिन इस दिसम्बर में मैं और मेरे घर के लोग और अधिकतर सेवक पुरुष और स्त्रियाँ मौसमी बीमारी से बीमार हैं। मेहमानों की सेवा में रुकावट होगी दूसरे भी कई कारण हैं जिनका लिखना अधिक विस्तार करना है । इसलिए घोषणा की जाती है कि इस बार कोई जलसा नहीं होगा । हमारे सारे मित्रगण सूचित रहें ।

वस्सलाम

उद्घोषक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَلَّذِیْنَ ھُمْ مُحْسِنُوْنَ

(अनुवाद :- नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा धारण करते हैं और दूसरों पर उपकार करते हैं - अनुवादक ।)

مبادہ دل آں فرومایہ شاد   کہ از بہر دنیا دہد دیں بباد

(अनुवाद :- ख़ुदा करे उस नीच का दिल कभी खुश न हो जिसने दुनिया के लिए दीन (धर्म) को बर्बाद कर लिया ।) (अनुवादक)

मैं अपनी जमाअत के लिए विशेषरूप से यह इश्तिहार प्रकाशित करता हूँ कि वे उस इश्तिहार के परिणाम की प्रतीक्षा करते रहें जो 21 नवम्बर सन् 1898 ई. को बतौर मुबाहला शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब इशाअतुस्सुन्न: और उसके दो साथियों के बारे में प्रकाशित किया गया है । जिसकी समय सीमा 15 जनवरी सन् 1900 ई. में समाप्त होगी ।

मैं अपनी जमाअत को कुछ शब्द नसीहत के तौर पर कहता हूँ कि वे तक़्वा धारण करके व्यर्थ बातों के मुक़ाबले में व्यर्थ बातें न करें और गालियों के मुक़ाबले पर गालियाँ न दें । वे बहुत कुछ हँसी और ठट्ठा सुनेंगे जैसा कि वे सुन रहे हैं मगर चाहिए कि खामोश रहें, तक़्वा और नेक नीयती के साथ ख़ुदा तआला के फैसले की ओर ध्यान दें । अगर वे चाहते हैं कि ख़ुदा तआला की दृष्टि में सहायता योग्य ठहरें तो नेकी, तक़्वा और धैर्य को हाथ से न जाने दें । अब उस अदालत के सामने मुक़द्दमे की मिस्ल है जो किसी की रियायत नहीं करती और धृष्टता के तरीक़ों को पसन्द नहीं करती । जब तक इन्सान अदालत के कमरे से बाहर है हालाँकि उसके दुष्कर्म की भी पकड़ है मगर उस इन्सान के अपराध की पकड़ बहुत सख़्त है जो

अदालत के सामने खड़े होकर धृष्टता पूर्वक अपराध करता है। इसलिए मैं तुम्हें कहता हूँ कि ख़ुदा तआला की अदालत की तौहीन से डरो और विनम्रता एवं धैर्य और तक़्वा धारण करो और ख़ुदा तआला से चाहो कि वह तुम में और तुम्हारी क़ौम में निर्णय करे । उचित है कि शेख मुहम्मद हुसैन और उसके साथियों से बिल्कुल मुलाक़ात न करो क्योंकि कभी-कभी बातचीत लड़ाई-झगड़े का कारण बन जाती है और उत्तम है कि इस अवधि में कुछ बहस-मुबाहसा भी न करो क्योंकि कभी-कभी बहस-मुबाहसे से स्वभावों में गर्मी पैदा होती हैं। आवश्यक है कि सत्कर्म, सच्चाई और तक़्वा में आगे क़दम बढ़ाओ क्योंकि ख़ुदा उनको जो तक़्वा धारण करते हैं कभी नष्ट नहीं करता । देखो हज़रत मूसा नबी अलैहिस्सलाम जो सबसे अधिक अपने युग में गंभीर और संयमी थे, तक़्वा की बरकत से फ़िरऔन पर कैसे विजयी हुए । फिरऔन चाहता था कि उनको मौत के घाट उतार दे लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों के सामने ख़ुदा तआला ने फिरऔन को उसकी सारी फ़ौज के साथ डुबो दिया । फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के युग में दुष्ट यहूदियों ने यह चाहा कि उनका वध कर दें और न केवल वध करें बल्कि उनकी पवित्र आत्मा पर सलीबी मौत से ला'नत का दाग़ लगा दें, क्योंकि तौरात में लिखा था कि जो व्यक्ति लकड़ी अर्थात सलीब पर मारा जाए वह ला'नती है अर्थात उसका दिल गन्दा, अपवित्र और ख़ुदा के सामीप्य से दूर हो जाता है तथा ख़ुदा की ओर से धिक्कृत और शैतान के समान हो जाता है इसीलिए लईन शैतान का नाम है । यह बहुत ही बुरा षड़यन्त्र था जो हज़रत मसीह के बारे में सोचा गया था ताकि इससे वह नालायक़ क़ौम यह निष्कर्ष निकाले कि यह व्यक्ति पाकदिल और सच्चा नबी और ख़ुदा का प्यारा नहीं है बल्कि ला'नती है जिसका दिल पवित्र नहीं है ।

जैसा कि ला'नत का अर्थ है कि वह ख़ुदा से पूर्णतः विमुख और ख़ुदा उससे विमुख है लेकिन क़ादिर क़य्यूम ख़ुदा ने बद्नीयत यहूदियों को उस इरादे से नाकाम और नामुराद रखा और अपने पवित्र नबी को न केवल सलीबी मौत से बचाया बल्कि उसको एक सौ बीस वर्ष* तक ज़िन्दा रखकर समस्त यहूदी शत्रुओं को

* प्रमाणित हदीस से साबित है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की एक सौ बीस वर्ष की आयु हुई थी, लेकिन तमाम् यहूदी और ईसाइयों के मतानुसार सलीब की घटना उस समय घटी थी जब हज़रत मसीह की आयु केवल तेंतीस वर्ष की थी । इस दलील से स्पष्ट है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की कृपा से सलीब से छुटकारा पाकर शेष आयु भ्रमण में व्यतीत की थी । प्रमाणित हदीसों से यह प्रमाण मिलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सय्याह (भ्रमण करने वाले) नबी थे । अगर वह सलीब की घटना के समय पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चले गए थे तो भ्रमण किस ज़माने में किया । हालाँकि शब्दकोष लिखने वाले भी मसीह के शब्द का एक कारण यह बयान करते हैं कि यह शब्द मसह से निकला है और मसह भ्रमण को कहते हैं । इसके अतिरिक्त यह आस्था कि ख़ुदा ने यहूदियों से बचाने के लिए हज़रत ईसा को दूसरे आसमान पर पहुँचा दिया था बिल्कुल व्यर्थ मालूम होता है, क्योंकि ख़ुदा के इस काम से यहूदियों पर कोई तर्क पूरा नहीं होता। यहूदियों ने न तो आसमान पर चढ़ते देखा और न आज तक उतरते देखा । फिर वे इस निरर्थक और बिना सुबूत क़िस्से को कैसे मान सकते हैं ? इसके अतिरिक्त यह भी सोचने के लायक है कि ख़ुदा तआला ने अपने रसूल करीम हज़रत सैयदिना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ुरैश लोगों के हमले के समय जो यहूदियों की अपेक्षा ज़्यादा बहादुर योद्धा और शत्रुता रखने वाले थे, सिर्फ उसी गुफ़ा की पनाह में बचा लिया जो मक्का मुअज़्ज़मा से केवल तीन मील की दूरी पर थी तो क्या ख़ुदा तआला को डरपोक यहूदियों से इतना डर था कि दूसरे आसमान पर पहुँचाए बिना उसके दिल में यहूदियों के अन्याय का भय दूर नहीं हो सकता था बल्कि यह क़िस्सा सरासर कहानी के रंग में बनाया गया है और क़ुरआन करीम के सरासर विपरीत है

उसके सामने नष्ट कर दिया । हाँ ख़ुदा तआला के उस अनादि नियम के अनुसार कोई भी साहिबे हिम्मत नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने लोगों की ओर से सताए जाने के कारण हिजरत न की हो । हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने भी तीन वर्ष के प्रचार के बाद सलीबी उपद्रव से मुक्ति पाकर हिन्दुस्तान की ओर हिजरत की

शेष हाशिया :- और बड़े स्पष्ट प्रमाणों से झूठा साबित होता है । हम बयान कर चुके हैं कि सलीबी घटना की असल वास्तविकता जानने के लिए मरहम-ए-ईसा एक ज्ञान का माध्यम और सच्चाई ज्ञात करने के लिए उच्च श्रेणी का पैमाना है और इस वर्णन से पूर्णत: मुझे इस लिए जानकारी है कि मैं एक वैद्य खानदान से हूँ और मेरे पिताजी मिर्ज़ा गुलाम मुर्तुज़ा साहिब जो इस ज़िले के एक प्रतिष्ठित बड़े आदमी थे और उच्च श्रेणी के कुशल वैद्य थे जिन्होंने लगभग अपनी आयु के 60 साल इस तजुर्बा में लगाए थे और जहाँ तक सम्भव था चिकित्सा की किताबों का एक बड़ा भण्डार जमा किया था । मैंने स्वयं चिकित्सा की किताबें पढ़ीं हैं और उन किताबों को हमेशा देखता रहा । इसलिए मैं अपनी व्यक्तिगत जानकारी से बयान करता हूँ कि एक हज़ार से अधिक ऐसी किताबें होंगी जिनमें मरहम-ए-ईसा का वर्णन है और उनमें यह भी लिखा है कि यह मरहम हज़रत ईसा के लिए बनाई गई थी । उन किताबों में से कई यहूदियों की किताबें हैं और कई ईसाइयों की और कई मजूसियों की । अत: ज्ञान की खोज से यह एक सुबूत मिलता है कि नि:सन्देह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सलीब से रिहाई पाई थी। अगर इन्जील वालों ने इसके उलट लिखा है तो उनकी गवाही थोड़ी सी भी विश्वास के योग्य नहीं । क्योंकि प्रथमत: वे लोग तो सलीब की घटना के समय वहां मौजूद नहीं थे बल्कि अपने आक़ा से बेवफाई करके सब के सब भाग गए थे और दूसरी बात यह है कि इन्जीलों में अत्यन्त मतभेद है यहाँ तक कि बरनबास की इन्जील में हज़रत मसीह के सलीब पर मरने से इन्कार किया गया है । तीसरी बात यह है कि इन्हीं इन्जीलों में जो बड़ी विश्वस्त समझी जाती हैं लिखा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब की घटना के बाद अपने हवारियों (सहचरों) को मिले और अपने घाव उनको दिखलाए । अत: इस बयान से ज्ञात

और यहूदियों के दूसरे क़बीलों को जो बाबिल से मतभेद और अत्याचार के ज़माने में हिन्दुस्तान, कश्मीर और तिब्बत में आए हुए थे, ख़ुदा तआला का सन्देश पहुँचाकर अन्ततः स्वर्ग-समान कश्मीर की धरती में मृत्यु पाई और श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में पूरे सम्मान के साथ दफ़न किए गये । आपकी क़ब्र बहुत

शेष हाशिया :- होता है कि उस समय घाव मौजूद थे जिनके लिए मरहम तैयार करने की आवश्यकता थी । इसलिए निःसन्देह समझा जाता है कि ऐसे अवसर पर वह मरहम बनाया गया था । इंजीलों से साबित होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसी आसपास के इलाके में चालीस दिन छुप-छुपकर रहे और जब मरहम के लगाने से पूर्णतः ठीक हो गए तब आपने यात्रा की । खेद है कि एक डाक्टर साहिब ने रावलपिंडी से एक घोषणापत्र प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने इस बात से इन्कार किया है कि मरहम-ए-ईसा का नुस्खा विभिन्न क़ौमों की किताबों में पाया जाता है । ज्ञात होता है कि उनको इन घटना के सुनने से कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब पर नहीं मरे बल्कि ज़ख़्मी होने की हालत में ज़िन्दा रिहाई पाई, बड़ी घबराहट पैदा हुई और सोचा कि इससे कफ़्फ़ारा का सारा षड़यन्त्र झूठा ठहरता है लेकिन यह शर्म के योग्य बात है कि उन किताबों के होने से इन्कार किया जाए जिनमें यह नुस्खा मरहम-ए-ईसा मौजूद है। अगर वह सच्चाई जानना चाहते हैं तो हमारे पास आकर उन किताबों को देख लें । ईसाइयों के लिए केवल यही मुसीबत नहीं कि मरहम-ए-ईसा की ऐतिहासिक गवाही उन सिद्धान्तों को रद्द करती है और कफ़्फ़ारा और तस्लीस● इत्यादि की सारी इमारत तुरन्त गिर जाती है बल्कि इन दिनों इस सुबूत के समर्थन में दूसरे सुबूत भी निकल आए हैं क्योंकि खोज से साबित होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने सलीबी घटना से बचकर हिन्दुस्तान का अवश्य रूप से सफर किया है और नैपाल से होते हुए तिब्बत तक पहुँचे और फिर कश्मीर में लम्बे समय तक रहे और बनी इस्राईल के वे लोग जो कश्मीर में बाबिल की मुखालिफत और

● अर्थात बाप, बेटा और रूहुलकुदुस के नाम से तीन ख़ुदाओं के मानने का सिद्धान्त - अनुवादक ।

मशहूर है, उसके दर्शन किए जाते हैं और उससे बरकत ली जाती है । इसी तरह ख़ुदा तआला ने हमारे सरदार व मौला नबी आख़िरुज़्ज़मान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जो समस्त सदाचारियों के सरदार थे भिन्न-भिन्न प्रकार के समर्थन और सहायताओं से कामयाब किया । यद्यपि प्रारंभ में हज़रत मूसा

शेष हाशिया :– अत्याचार के समय में आकर बसे थे उनको शिक्षाएँ दीं और अन्ततः एक सौ बीस वर्ष की आयु में श्रीनगर में देहान्त पाए और मुहल्ला ख़ानयार में दफ़न हुए और लोगों की ग़लत बयानी से **यूज़ आसफ़ नबी●** के नाम से मशहूर हो गए । इस घटना का समर्थन वह इन्जील भी करती है जो अभी तिब्बत से मिली है । यह इन्जील बड़ी कोशिश से लन्दन से प्राप्त हुई है । हमारे निश्छल मित्र शेख रहमतुल्लाह साहब व्यापारी लगभग तीन माह तक लन्दन में रहे और

● नोट :- एक मूर्ख मुसलमान ने अपने दिल से ही यह बात प्रस्तुत की है कि शायद यूज़ आसफ़ से आसफ की पत्नी मुराद हो जो सुलैमान का वज़ीर था मगर उस मूर्ख को यह समझ नहीं आया कि आसफ की पत्नी नबी नहीं थी और उसको शाहज़ादा नहीं कह सकते । यह भी नहीं सोचा कि यह दोनों पुल्लिंग नाम हैं । स्त्रीलिंग के लिए अगर वह यह विशेषताएँ भी रखती हो तो नबीयः या शाहज़ादी कहा जाएगा न कि नबी और शाहज़ादा । उस अनपढ़ ने यह भी नहीं सोचा कि उन्नीस सौ की अवधि हज़रत ईसा के ज़माने से ही मेल खाती है । सुलैमान तो हज़रत ईसा से कई सौ वर्ष पहले हुआ था । इसके अतिरिक्त उस नबी की क़ब्र को जो श्रीनगर में है कई यूज़ आसफ के नाम से पुकारते हैं लेकिन अधिकतर लोग यह कहते हैं कि यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र है । हमारे निश्छल मौलवी अब्दुल्लाह साहिब कश्मीरी ने जब श्रीनगर में इस क़ब्र के बारे में जाँच पड़ताल शुरू की तो कई लोगों ने यूज़ आसफ का नाम सुनकर कहा कि हम में वह क़ब्र ईसा साहब की क़ब्र के नाम से मशहूर है । अतः कई लोगों ने यही गवाही दी जो अब तक श्रीनगर में ज़िन्दा मौजूद हैं । जिसको सन्देह हो वह स्वयं कश्मीर में जाकर कई लाख लोगों से पूछ ले । अब इसके बाद इन्कार करना बेशर्मी है ।

और हज़रत ईसा की तरह आपको भी हिजरत करनी पड़ी लेकिन वही हिजरत सहायता और विजय की प्रारंभिक विशेषताएँ अपने अन्दर रखती थी । अत: हे मित्रो ! निस्सन्देह जान लो कि मुत्तक़ी कभी बर्बाद नहीं किया जाता । जब दो पक्ष आपस में दुश्मनी करते हैं और दुश्मनी को चरमसीमा तक पहुँचाते हैं तो

शेष हाशिया :- इस इन्जील को तलाश करते रहे । अन्तत: एक जगह से मिल गई । यह इन्जील बुद्ध धर्म की एक पुरानी किताब का मानो एक हिस्सा है। बुद्ध धर्म की किताबों से यह प्रमाण मिलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हिन्दुस्तान में आए और एक लम्बे समय तक विभिन्न लोगों को उपदेश देते रहे और बुद्ध धर्म की किताबों में, जो उनके इन देशों में आने का वर्णन लिखा गया है उसका वह कारण नहीं जो लांबे कहते हैं कि उन्होंने गौतम बुद्ध की शिक्षा फायदे के तौर पर पाई थी ऐसा कहना एक दुष्टता है बल्कि असल वास्तविकता यह है कि जब ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब पर मरने से बचा लिया तो उन्होंने उसके बाद उस क्षेत्र में रहना उचित न समझा । जिस तरह क़ुरैश के लोगों के अत्यधिक अत्याचार ढाने के समय अर्थात जब उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने की ठान ली तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने क्षेत्र से हिजरत की थी । इसी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यहूदियों के अत्यधिक अत्याचार ढाने के समय अर्थात क़त्ल के इरादा के समय हिजरत की । चूँकि बनी इस्राईल बुख़्ता नसर के अत्याचार काल में तितर-बितर होकर हिन्दुस्तान, कश्मीर, तिब्बत और चीन की ओर चले आए थे । इसलिए हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने इन्हीं देशों की ओर हिजरत करना ज़रूरी समझा ।

इतिहास से इस बात का भी पता मिलता है कि कई यहूदी इस देश में आकर अपनी पुरानी प्रवृत्ति के अनुसार बौद्ध धर्म में भी दाखिल हो गए थे । अत: अभी निकट ही जो एक लेख सिविल मिलिट्री गजट पर्चा 23 नवम्बर सन् 1898 ई. छपा है । उसमें एक अंग्रेज़ अन्वेषक ने इस बात का इक़रार भी किया है और इस बात को भी मान लिया है कि यहूदियों के कुछ सम्प्रदाय इस देश में आए थे और इस देश में बस

वह पक्ष जो ख़ुदा की दृष्टि में मुत्तक़ी और परहेज़गार होता है आसमान से उसके लिए सहायता उतरती है और इस तरह पर आसमानी निर्णय से धार्मिक झगड़े निर्णय पा जाते हैं । देखो हमारे सरदार व मौला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कैसे कमज़ोरी की हालत में मक्का में प्रकट हुए थे और उन दिनों

शेष हाशिया :- गए थे और इसी पर्चा सिविल में लिखा है कि ''असल में अफ़गान भी बनी इस्राईल में से हैं ।'' अतएव जब कई बनी इस्राईल बौद्ध धर्म स्वीकार कर चुके थे तो अवश्य था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस देश में आकर बौद्ध धर्म की असलियत की ओर ध्यान देते और उस धर्म के गुरुओं से मिलते । अत: ऐसा ही हुआ । इसी कारण से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के हालात बौद्ध धर्म में लिखे गए । ज्ञात होता है कि उस ज़माने में इस देश में बौद्ध धर्म का बहुत ज़ोर था और वेद का धर्म मर चुका था और बौद्ध धर्म वेद का इन्कार करता था ।● सारांश यह कि इन सारी बातों को एकत्र करने से अवश्य यह परिणाम निकलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस देश में अवश्य आए थे । यह बात सच्ची और प्रमाणित है कि बौद्ध धर्म की किताबों में उनके इस देश में आने का वर्णन है और जो क़ब्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कश्मीर में है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह लगभग 1900 वर्ष से है, यह इस बात के लिए बहुत बड़ा प्रमाण है । सम्भवत: उस क़ब्र के साथ कुछ कतबे होंगे जो अब दिखाई नहीं देते । इन तमाम् बातों की जाँच पड़ताल के लिए हमारी जमाअत में से एक ऐतिहासिक जाँच पड़ताल की टीम तैयार हो रही है जिसके मुखिया मेरे धर्म भाई मौलवी हकीम हाजी नूरुद्दीन साहिब नियुक्त हुए हैं । यह टीम इस खोज और जाँच पड़ताल के लिए विभिन्न देशों में फिरेगी और इन प्रयासरत धर्मनिष्ठों का काम होगा कि पाली ज़बान की किताबों को भी देखें क्योंकि यह भी पता लगा है

● नोट :- केवल यही नहीं कि बौद्ध धर्म की कई किताबों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हिन्दुस्तान और तिब्बत में आने का वर्णन है बल्कि हमें प्रमाणित सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि कश्मीर के पुराने ऐतिहासिक लेखों में भी इसका वर्णन है ।

अबूजहल इत्यादि काफ़िरों का कैसा बोलबाला था और लाखों आदमी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्राणों के दुश्मन हो गए थे तो फिर क्या चीज़ थी जिसने अन्तत: हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सफलता दी। नि:सन्देह जानो कि यही पवित्र आत्मा, सच्चाई और रास्तबाज़ी थी । इसलिए

शेष हाशिया :– कि हज़रत मसीह उस क्षेत्र में भी अपने खोए हुए अनुयायियों की तलाश में गए थे लेकिन कश्मीर में जाना फिर तिब्बत में जाकर बौद्ध धर्म की पुस्तकों से यह सारा पता लगाना इस टीम का उत्तरदायित्व होगा । मेरे धर्म भाई शेख रहमतुल्लाह साहिब व्यापारी लाहौर ने इन तमाम् खर्चों को उठाने का ज़िम्मा लिया है लेकिन अगर यह सफर बनारस, नेपाल, मद्रास, सवात, कश्मीर और तिब्बत इत्यादि देशों तक किया जाए जहाँ-जहाँ हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के ठहरने का पता मिला है तो कुछ सन्देह नहीं कि यह बड़े खर्च का काम है और उम्मीद की जाती है कि अल्लाह तआला हर हाल में इसको पूरा करेगा । हर एक बुद्धिमान समझ सकता है कि यह एक ऐसा सबूत है कि इससे तुरन्त ईसाई धर्म का ताना-बाना टूटता है और उन्नीस सौ वर्ष का षड़यन्त्र अचानक ख़त्म हो जाता है । इस बात की पुष्टि हो गई है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का हिन्दुस्तान और कश्मीर इत्यादि में आना एक सच्ची बात है और इसके बारे में ऐसे प्रमाण मिल गए हैं कि अब वे किसी मुखालिफ़ के षड़यन्त्र से छुप नहीं सकते। ज्ञात होता है इन व्यर्थ और ग़लत अक़ीदों की इसी ज़माने तक ज़िन्दगी थी । हमारे सैयद व मौला ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कहना कि वह मसीह मौऊद जो आने वाला है सलीब (की विचारधाराओं) को तोड़ेगा और आसमानी हथियार (अर्थात दुआओं) से दज्जाल को क़त्ल करेगा । इस हदीस के अब यह अर्थ स्पष्ट हुए हैं कि उस मसीह के समय में ज़मीन और आसमान का ख़ुदा अपनी ओर से कई ऐसी चीज़ें और घटनाएँ पैदा कर देगा जिनसे सलीब और तसलीस और कफ़्फ़ार: के सिद्धान्त स्वयं खत्म हो जाएँगे। मसीह का आसमान से उतरना भी इन्हीं अर्थों के अनुसार है कि उस समय आसमान के ख़ुदा की इच्छा से सलीबी विचारधारा को

भाइयो ! उस पर चलो और उस सच्चाई और पवित्र आत्मा के घर में बड़े ज़ोर के साथ प्रवेश करो, फिर शीघ्र ही देख लोगे कि ख़ुदा तआला तुम्हारी मदद करेगा, वह ख़ुदा जो आँखों से अदृश्य मगर सब चीज़ों से ज़्यादा चमक रहा है जिसके प्रताप से फरिश्ते भी डरते हैं । वह शेखी और चालाकी को पसन्द नहीं करता और डरने वालों पर रहम करता है । इसलिए उससे डरो और हर एक

शेष हाशिया :- टुकड़े-टुकड़े करने के लिए खुले-खुले प्रमाण पैदा हो जाएँगे । अतः ऐसा ही हुआ । यह किसको पता था कि मरहम-ए-ईसा का नुस्खा सैकड़ों चिकित्सा की किताबों में लिखा हुआ मिल जाएगा । इस बात की किसको खबर थी कि बौद्ध धर्म की पुरानी किताबों से यह सुबूत मिल जाएगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शाम देश (जिसे आजकल सीरिया कहते हैं - अनुवादक) के यहूदियों से नाउम्मीद होकर हिन्दुस्तान और कश्मीर और तिब्बत की ओर आए थे ।●

यह बात कौन जानता था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कश्मीर में क़ब्र है । क्या इन्सान की ताक़त में था कि इन तमाम् बातों को अपने ज़ोर से पैदा कर सकता । अब यह घटनाएँ इस तरह से ईसाई धर्म को मिटाती हैं जैसे कि दिन चढ़ जाने से रात मिट जाती है । इस घटना के साबित होने से ईसाई धर्म को वह नुकसान पहुँचता है जो उस छत को पहुँच सकता है जिसका सारा बोझ एक शह्तीर (एक बड़ी लकड़ी जो छत पाटने के काम आती है - अनुवादक) पर था । शह्तीर टूटा और छत गिरी । अतः इसी तरह इस घटना के सबूत से ईसाई धर्म का अन्त है । ख़ुदा जो चाहता है करता है । इन्हीं क़ुदरतों से वह पहचाना गया है । देखो कैसे श्रेष्ठ अर्थ इस आयत के

● नोट :- हाल ही में मुसलमानों की लिखी हुई भी कुछ पुरानी किताबें मिली हैं जिनमें स्पष्ट तौर पर यह बयान मौजूद है कि यूज़ आसफ़ एक पैग़म्बर था जो किसी देश से आया था और शाहज़ादा भी था और कश्मीर में उसने मृत्यु पाई और बयान किया गया है कि वह नबी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से 600 वर्ष पहले गुज़रा है । (लेखक)

बात समझकर कहो । तुम उसकी जमाअत हो जिसको उसने नेकी का आदर्श दिखाने के लिए चुना है । इसलिए जो व्यक्ति बुराई नहीं छोड़ता और उसका मुँह झूठ से और उसका दिल गन्दे विचारों से परहेज़ नहीं करता वह इस जमाअत से अलग किया जाएगा । हे ख़ुदा के बन्दो ! दिलों को साफ़ करो और अपने

शेष हाशिया :- साबित हुए कि مَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ • अर्थात क़त्ल करना और सलीब से मसीह का मारना यह सब झूठ है। असल बात यह है कि उन लोगों को धोखा लगा है और मसीह ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार सलीब से बचकर निकल गया । अगर इन्जील को ग़ौर से देखा जाए तो इन्जील भी यही गवाही देती है । क्या मसीह की सारी रात की दर्दभरी दुआ रद्द हो सकती थी ? क्या मसीह का यह कहना कि मैं यूनुस की तरह तीन दिन क़ब्र में रहूँगा, क्या इसका यह अर्थ हो सकता है कि वह मुर्दा क़ब्र में रहा ? क्या यूनुस मछली के पेट में तीन दिन मृत रहा था ? क्या पिलातूस की पत्नी के ख़्वाब से ख़ुदा की यह मंशा नहीं मालूम होती कि मसीह को सलीब से बचा ले । इसी तरह मसीह का शुक्रवार के दिन आख़िरी समय पर सलीब पर चढ़ाए जाना और शाम होने से पहले उतारे जाना और पुरानी रीति-रिवाज के अनुसार तीन दिन तक सलीब पर न रहना और हड्डी न तोड़े जाना और ख़ून का निकलना, क्या ये सारे वे काम नहीं हैं जो चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि ये सारे कारण मसीह की जान बचाने के लिए पैदा किए गए हैं और दुआ करने के साथ ही ये रहमत के कारण प्रकट हुए । भला भक्त की ऐसी दुआ जो सारी रात रो-रोकर की गई कब रद्द हो सकती थी । फिर मसीह का सलीब की घटना के बाद हवारियों को मिलना और घाव दिखाना इस बात पर कितना ठोस प्रमाण है कि वह सलीब पर नहीं मरा । अगर यह सत्य नहीं है तो भला अब मसीह को पुकारो कि तुम्हें आकर मिल जाए जिस तरह कि हवारियों को मिला था । अतः हर एक दृष्टि से साबित है कि हज़रत मसीह की सलीब से जान बचाई गई और वह इस हिन्दुस्तान में आए, क्योंकि बनी इस्राईल के दस फ़िर्क़े इन्हीं देशों में आ गए थे जो अन्त में

● सूरः अन्निसा आयत नं. 158

मनों को धो डालो । तुम दोग़लेपन से हर एक को ख़ुश कर सकते हो मगर ख़ुदा को इस आदत से क्रोधित करोगे । अपने प्राणों पर दया करो और अपनी नस्ल को नष्ट होने से बचाओ । कभी संभव ही नहीं कि ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो जब तक तुम्हारे दिल में उससे अधिक कोई दूसरा प्रिय हो । अगर चाहते हो कि इसी दुनिया में ख़ुदा को देख लो तो उसके मार्ग में लीन हो

शेष हाशिया :- मुसलमान हो गए और फिर इस्लाम स्वीकार करने के बाद तौरात में दिए गए वादा के अनुसार उनमें कई बादशाह भी हुए और यह एक दलील आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की सच्चाई पर है क्योंकि तौरात में वादा था कि बनी इस्राईल आने वाले नबी (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम - अनुवादक) के अनुयायी होकर शासन और सत्ता पाएँगे। अत: मसीह इब्ने मरयम को सलीबी मौत से मारने का क़िस्सा यह एक ऐसी जड़ है कि इसी पर धर्म के तमाम् सिद्धान्तों अर्थात कफ़्फ़ार: और तसलीस इत्यादि की बुनियाद रखी गई थी और यही वह विचार है जो ईसाइयों के चालीस करोड़ लोगों के दिलों में बैठ गया और इसके ग़लत साबित होने से ईसाई धर्म का कुछ भी शेष नहीं रहता । अगर ईसाइयों में कोई फ़िर्क़ा धार्मिक खोज की जिज्ञासा रखता है तो सम्भव है कि इन सबूतों से परिचित होकर वे बहुत जल्द ईसाई धर्म को छोड़ दे । यदि इस जिज्ञासा की आग यूरोप के तमाम् दिलों में भड़क उठे तो जो गिरोह चालीस करोड़ लोगों का उन्नीस सौ वर्ष में तैयार हुआ है, सम्भव है कि उन्नीस माह के अन्दर ख़ुदा की सहायता से एक पलटा खाकर मुसलमान हो जाए, क्योंकि सलीबी विचारधारा पर विश्वास के बाद यह साबित होना कि हज़रत मसीह सलीब पर नहीं मारे गए बल्कि दूसरे देशों में फिरते रहे। यह ऐसा विषय है कि अचानक ईसाई अक़ीदों को दिलों से निकालता है और ईसाइयत की दुनिया में एक बड़ा बदलाव पैदा करता है । हे प्यारो ! अब ईसाई धर्म को छोड़ो कि ख़ुदा ने **हक़ीक़त को दिखा दिया** । इस्लाम की रौशनी में आओ ताकि मुक्ति पाओ । सर्वज्ञ ख़ुदा जानता है कि यह सारी नसीहत नेक नीयती से व्यापक जाँच पड़ताल के बाद की गई है - इसी से ।

जाओ, उसके लिए खो जाओ और पूरी तरह उस के हो जाओ । चमत्कार क्या चीज़ है ? और चमत्कार कब प्रकट होते हैं ? अत: समझो और याद रखो कि दिलों की तब्दीली आसमान की तब्दीली को चाहती है । वह आग जो निष्कपट प्रेम के साथ भड़कती है वह ब्रह्मलोक को निशान की सूरत पर दिखाती है। सारे मोमिन हालाँकि साधारण तौर पर हर एक बात में सांझी हैं यहाँ तक कि हर एक को साधारण ख्वाबें भी आती हैं और कई लोगों को इल्हाम भी होते हैं लेकिन वह चमत्कार जो ख़ुदा का प्रताप और तेज अपने साथ रखता है और ख़ुदा को दिखा देता है वह ख़ुदा की एक विशेष सहायता होती है जो उन भक्तों की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए प्रकट की जाती है जो ख़ुदा के समक्ष प्राण न्योछावर करने का स्थान रखते हैं, जबकि वे दुनिया में बदनाम किए जाते हैं और उनको बुरा कहा जाता है और झूठा, बदकार, ला'नती, दज्जाल, ठग और धोखेबाज़ उनका नाम रखा जाता है और उनको मिटाने की कोशिशें की जाती हैं तो एक हद तक वे सब्र करते और अपने आप को थामे रहते हैं । फिर ख़ुदा तआला की ग़ैरत चाहती है कि उनके समर्थन में कोई निशान दिखा दे तब अचानक उनका दिल दु:खता और सीना ग़मगीन हो जाता है तब वे ख़ुदा की चौखट पर गिड़गिड़ाहट के साथ झुकते हैं और दर्दभरी दुआओं का आसमान पर एक भयानक शोर पड़ता है और जिस तरह अत्यधिक गर्मी के बाद आसमान पर छोटे-छोटे टुकड़े बादल के पैदा हो जाते हैं, फिर वे इकट्ठे होकर एक परत दर परत बादल बनकर अचानक बरसना शुरू हो जाता है इसी तरह धर्मनिष्ठों की दर्द भरी हुई गिड़गिड़ाहटें जो अपने समय पर होती हैं रहमत के बादलों को उठाती हैं और अन्तत: एक निशान की सूरत में धरती पर उतरती हैं । अत: जब अल्लाह के किसी महान सच्चे भक्त पर कोई अत्याचार

अपनी चरमसीमा तक पहुँच जाए तो समझना चाहिए कि अब कोई निशान प्रकट होगा ।

ہر بلا کیں قوم را حق دادہ است　　زیر آں گنجِ کرم بنہادہ است

अनुवाद :- हर एक आज़माइश, जो ख़ुदा ने इस क़ौम के लिए मुक़द्दर की है उसके नीचे रहमतों का ख़ज़ाना छुपा रखा है। (अनुवादक)

मुझे अफसोस से इस जगह यह भी लिखना पड़ा है कि हमारे विरोधी अन्याय, झूठ और टेढ़ेपन से नहीं रुकते । वे ख़ुदा की बातों और निशानों को बड़ी दिलेरी से झुठलाते हैं । मुझे उम्मीद थी कि मेरे 21 नवम्बर 1898 ई. के घोषणापत्र के बाद जो शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी और मुहम्द बख़्श जाफ़र जटली और अबुलहसन तिब्बती के मुकाबले में लिखा गया था यह लोग खामोश रहते क्योंकि घोषणापत्र में स्पष्ट तौर पर ये शब्द थे कि 15 जनवरी सन् 1900 ई. तक इस बात की समय-सीमा निर्धारित हो गई है कि जो व्यक्ति झूठा होगा, ख़ुदा उसको शर्मिन्दा और अपमानित करेगा । यह एक खुली-खुली सच्चे और झूठे की कसौटी थी जो ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम के द्वारा क़ायम की थी । चाहिए था कि ये लोग उस घोणापत्र के प्रकाशित होने के बाद चुप हो जाते और 15 जनवरी सन् 1900 ई. तक ख़ुदा तआला के फ़ैसले की प्रतीक्षा करते लेकिन खेद है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि उपरोक्त जटली ने 30 नवम्बर सन् 1898 ई. के अपने घोषणापत्र में वही गन्द फिर भर दिया जो हमेशा से उसकी आदत है और सरासर झूठ से काम लिया । वह उस घोषणापत्र में लिखता है कि कोई भविष्यवाणी इस व्यक्ति अर्थात इस विनीत की पूरी नहीं हुई । हम इसके जवाब में इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर अल्लाह की धिक्कार हो । वह यह भी कहता है कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई । हम इसके जवाब

में भी झूठों पर अल्लाह की धिक्कार हो के अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते । वास्तविकता तो यह है कि जब इन्सान का दिल ईर्ष्या और दुश्मनी से काला हो जाता है तो वह देखते हुए नहीं देखता और सुनते हुए नहीं सुनता, उसके दिल पर ख़ुदा की मुहर लग जाती है उसके कानों पर पर्दे पड़ जाते हैं । यह बात अब तक किस से छुपी है कि आथम से संबंधित भविष्यवाणी शर्त पर आधारित थी और ख़ुदा के इल्हाम ने स्पष्ट कर दिया था कि वह सच्चाई की ओर झुकने की दशा में समयसीमा के अन्दर मरने से बच जाएगा । फिर आथम ने अपनी करनी, कथनी, अपनी शर्मिन्दगी, अपने ख़ौफ़, अपने क़सम न खाने तथा नालिश न करने से साबित कर दिया कि भविष्यवाणी के दिनों में उसका दिल ईसाई धर्म पर क़ायम न रहा और इस्लाम की महानता उसके दिल में बैठ गई और यह कुछ असम्भव न था क्योंकि वह मुसलमानों की औलाद था और कुछ स्वार्थों के कारण इस्लाम से मुर्तद हुआ था । इस्लाम की विशेषताओं से परिचित था इसी कारण से उसको पूर्णत: ईसाइयों की आस्था से सहमति नहीं थी और मेरे बारे में वह शुरू से सद्भाव रखता था । इसलिए उसका इस्लामी भविष्यवाणी से डरना अत्यन्त स्वाभाविक था । जब उसने क़सम खाकर अपनी ईसाइयत साबित न की न नालिश की और चोर की तरह डरता रहा और ईसाइयों के अत्यन्त प्रेरित करने से भी वह उन कामों के लिए तैयार न हुआ तो क्या उसकी ये हरकतें ऐसी न थीं कि इससे यह परिणाम निकले कि वह इस्लामी भविष्यवाणी की महानता से अवश्य डरता रहा । लापरवाह ज़िन्दगी के लोग तो ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों से भी डर जाते हैं फिर ऐसी भविष्यवाणी जो बड़े जोर-शोर से की गई थी, जिसके सुनते ही उसका रंग फीका पड़ गया था जिसके पूर न होने की दशा में मैंने अपने दण्डित होने का वादा किया था । फिर उसका रौब ऐसे

दिलों पर जो धार्मिक सच्चाइयों से अनभिज्ञ हैं क्यों न होता। अत: जब यह बात केवल कल्पना न रही बल्कि स्वयं आथम ने अपने भय और घबराहट और अत्यन्त डरी हुई हालत से जिसको सैकड़ों लोगों ने देखा, अपने दिल की बेचैनी और ईमानी हालत के बदलाव को स्पष्ट कर दिया और फिर समय-सीमा के बाद भी क़सम न खाने और नालिश न करने से उस बदलाव की हालत को और भी अधिक विश्वसनीय अवस्था तक पहुँचाया और ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार हमारे आख़िरी घोषणापत्र से छ: माह के अन्दर मर भी गया। अतएव क्या ये सारी घटनाएँ एक न्यायप्रिय और धर्मनिष्ठ के दिल को यह विश्वास नहीं दिलातीं कि वह भविष्यवाणी की समय-सीमा के अन्दर इल्हामी शर्त से फायदा उठाकर जीवित रहा। फिर ख़ुदा के इल्हाम की ख़बर के अनुसार गवाही को छुपाने के कारण मर गया। अब देखो और ढूँढो कि आथम कहाँ है ? क्या वह ज़िन्दा है ? क्या यह सच नहीं कि वह कई वर्ष से मर चुका, मगर जिस व्यक्ति के साथ उसने डाक्टर क्लार्क की कोठी पर अमृतसर में मुक़ाबला किया था वह तो अब तक ज़िन्दा मौजूद है जो अब यह लेख लिख रहा है। हे निर्लज्ज लोगो ! तनिक इस बात को तो सोचो कि वह गवाही को छुपाने के बाद क्यों जल्द मर गया। मैंने तो उसकी ज़िन्दगी में यह भी लिख दिया था कि अगर मैं झूठा हूँ तो मैं पहले मरूँगा अन्यथा मैं आथम की मौत को देखूँगा। इसलिए अगर शर्म है तो आथम को ढूँढकर लाओ कि कहाँ है ? वह मेरी उम्र के निकट था और तीस साल से मुझ से परिचित था। अगर ख़ुदा चाहता तो वह तीस साल तक और जीवित रह सकता था फिर यह क्या कारण हुआ कि वह उन्हीं दिनों में जब उसने ईसाइयों की दिलजोई के लिए इल्हामी पेशगोई की सच्चाई और अपने दिल के झुकाव को छुपाया और ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार मृत्यु पा

गया। ख़ुदा उन दिलों पर ला'नत डालता है जो सच्चाई को पाकर फिर उसका इन्कार करते हैं और चूँकि यह इन्कार जो अधिकतर ईसाइयों और बहुत से दुष्ट मुसलमानों ने किया, ख़ुदा तआला की दृष्टि में खुला-खुला अन्याय था इसलिए उसने एक दूसरी बड़ी भविष्यवाणी को पूरा करके अर्थात पंडित लेखराम की मौत की पेशगोई से मुन्किरों को शर्मिन्दा और लज्जित कर दिया । यह भविष्यवाणी इतना बड़ा चमत्कार थी कि इसमें समय से पूर्व अर्थात पाँच वर्ष पहले बताया गया था कि लेखराम किस दिन और किस प्रकार की मौत से मरेगा लेकिन खेद है कि द्वेषभावना रखने वाले लोगों ने जिनको मरना याद नहीं इस भविष्यवाणी को भी स्वीकार न किया । ख़ुदा ने बहुत से निशान प्रकट किए मगर ये सब से इन्कार करते हैं । अब यह घोषणापत्र 21 नवम्बर सन् 1898 ई. आख़िरी फ़ैसला है । चाहिए कि हर एक सत्याभिलाषी सब्र से प्रतीक्षा करे । ख़ुदा झूठों, कज़्ज़ाबों और धोखेबाज़ों की सहायता नहीं करता । कुरआन शरीफ़ में स्पष्ट लिखा है कि ख़ुदा तआला का यह वादा है कि वह मोमिनों और रसूलों को विजयी करता है। अब यह मामला आसमान पर है ज़मीन पर चिल्लाने से कुछ नहीं होता । दोनों पक्ष उसके सामने हैं और शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगा कि उसकी सहायता और मदद किस तरफ आती है । अन्त में हमारा यही कहना है कि सारी प्रशंसाएँ उस अल्लाह के लिए हैं जो समस्त लोकों का प्रतिपालक है । सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया ।

उद्घोषक

ख़ाकसार

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियान

30 नवम्बर सन् 1898 ई.

मौलवी अब्दुल्लाह साहिब निवासी कश्मीर का एक पत्र

(लोगों की जानकारी हेतु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की समाधि का मानचित्र इस घोषणापत्र के साथ प्रकाशित किया जाता है)

विनीत, अब्दुल्लाह की ओर से,

सेवा में

मसीह मौऊद

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातहू

हज़रत अक़दस इस विनीत ने आपकी आज्ञानुसार श्रीनगर में बिल्कुल ठीक जगह पर अर्थात अल्लाह के नबी शाहज़ादा यूज़ आसफ अलैहिस्सलातो वस्सलाम की पवित्र समाधि स्थल पर पहुँचकर जहाँ तक सम्भव था पूरी कोशिश से जाँच पड़ताल की और वृद्ध और पुराने लोगों से भी पूछा और मुजाविरों* और पास-पड़ोस के रहने वाले लोगों से भी हर एक पहलू से पूछताछ करता रहा । महोदय ! पूछ-ताछ और जाँच पड़तालों से मुझे मालूम हुआ है कि यह समाधि वास्तविक रूप से अल्लाह के नबी जनाब यूज़ आसफ़ अलैहिस्सलाम की है और यह मुसलमानों के मुहल्ले में है। वहाँ कोई हिन्दू नहीं रहता और न वहाँ हिन्दुओं की कोई क़ब्र है और विश्वसनीय लोगों की गवाही से यह बात साबित हुई है कि लगभग उन्नीस सौ वर्ष से यह क़ब्र है । मुसलमान बहुत आदर और सम्मान की दृष्टि से उसको देखते हैं और उसकी ज़ियारत (दर्शन) करते हैं और सब का कहना है कि इस क़ब्र में एक महान पैग़म्बर दफ़्न है जो

* अर्थात समाधि की देखभाल करने वाले - अनुवादक

कश्मीर में किसी और देश से लोगों को नसीहत करने के लिए आया था और कहते हैं कि यह नबी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लगभग छ: सौ वर्ष पहले गुज़रा है । यह अब तक स्पष्ट नहीं हुआ कि इस देश में क्यों आया ।* लेकिन यह घटनाएँ साबित हो चुकी हैं और लगातार प्रमाणों से पूरे

* वह नबी जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से छ: सौ वर्ष पहले गुज़रा है वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं और कोई नहीं और यूसु शब्द बिगड़ कर यूज़ आसफ़ बनना बहुत संभव है क्योंकि जब यूसु के शब्द को अंगेज़ी में भी **जीज़स** (Jesus) बना लिया है तो यूज़ आसफ़ में जीज़स से ज़्यादा अन्तर नहीं है । यह शब्द संस्कृत से कदापि नहीं मिलता जुलता बल्कि स्पष्ट तौर पर इब्रानी मालूम होता है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस देश में क्यों आए इसका कारण स्पष्ट है और वह यह है कि जब शाम● के यहूदियों ने आपकी तब्लीग़ (प्रचार) को स्वीकार न किया और आपको सलीब पर क़त्ल करना चाहा तो ख़ुदा तआला ने अपने वादा के अनुसार और दुआ को स्वीकार करके हज़रत मसीह को सलीब से ज़िन्दा बचा लिया । जैसा कि इन्जील में लिखा है कि हज़रत मसीह के दिल में था कि उन यहूदियों को भी ख़ुदा तआला का पैग़ाम पहुँचाएं जो बुखता नसर बादशाह की लूटमार और तबाही के ज़माने में हिन्दुस्तान के इलाकों में आ गए थे । इसलिए इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह इस देश में आए । डाक्टर वर्नियर साहिब फ्रांसीसी अपने सफरनामा में लिखते हैं कि कई अंग्रेज़ अन्वेषकों ने इस राय को बड़ी दृढ़ता के साथ स्पष्ट किया है कि कश्मीर के रहने वाले मुसलमान वस्तुत: इस्राईली हैं जो विरोध और दुश्मनी के समयों में इस देश में आए थे और उनके लम्बे चेहरे और लम्बे कुरते और कई रस्मोरिवाज इस बात के गवाह हैं । अत: अत्यन्त संभव है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शाम (देश) के यहूदियों से निराश होकर इस देश में आए हुए लोगों में धर्म प्रचार के लिए आए होंगे । अभी निकट के समय में जो रूसी भ्रमणकर्ता ने

● वर्तमान काल में इसे सीरिया के नाम से जाना जाता है- अनुवादक ।

विश्वास तक पहुँच चुकी हैं कि यह महान व्यक्ति जिनका नाम कश्मीर के मुसलमानों ने यूज़ आसफ़ रख लिया है, यह नबी हैं और शहज़ादा भी हैं इस देश में कोई हिन्दुओं की उपाधि इनकी मशहूर नहीं है जैसे कि राजा या अवतार या ऋषि मुनि और सिद्ध इत्यादि बल्कि संयोग से सब लोग नबी कहते हैं और नबी

शेष हाशिया :- एक इन्जील लिखी है जिसको लन्दन से मैंने मँगवाया है वह भी इस राय में हम से सहमत है कि अवश्य हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस देश में आए थे और जो कतिपय लेखकों ने यूज़ आसफ़ नबी की घटनाएँ लिखी हैं जिनके अनुवाद यूरोप के देशों में भी फैल गए हैं । उनको पादरी लोग भी पढ़कर बहुत हैरान हैं क्योंकि वे शिक्षाएँ इन्जील की पुरानी शिक्षा से बहुत मिलती हैं बल्कि अधिकतर लेखों में एक जैसा विषय ज्ञात होता है और इसी तरह तिब्बती इन्जील, इन्जील की पुरानी शिक्षा से बहुत मिलती-जुलती है । अत: यह प्रमाण ऐसे नहीं हैं कि कोई व्यक्ति परस्पर द्वेष और बलपूर्वक तुरन्त इनको रद्द कर सके बल्कि इनमें सच्चाई का प्रमाण अत्यन्त स्पष्ट तौर पर पाया जाता है और इतने प्रमाण हैं कि इकट्ठे करके उनको देखना इस निष्कर्ष तक पहुँचाता है कि यह निराधार वर्णन नहीं है । यूज़ आसफ़ का नाम का इब्रानी भाषा से मिलता-जुलता होना और यूज़ आसफ़ का नाम नबी मशहूर होना, जो ऐसा शब्द है कि केवल इस्राईली और इस्लामी नबियों पर बोला गया है और फिर उस नबी के साथ शहज़ादा का शब्द होना और फिर उस नबी की विशेषताएँ हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से पूर्णत: मिलना और उसकी शिक्षा इन्जील की शिष्टाचार संबंधी शिक्षा से बिल्कुल एक जैसी होना और फिर मुसलमानों के मुहल्ले में उसका दफ़न होना और फिर उन्नीस सौ वर्ष तक उसकी क़ब्र की अवधि बयान किए जाना और फिर इस ज़माने में एक अंग्रेज़ के द्वारा तिब्बती इन्जील का बरामद होना और उस इन्जील में स्पष्ट तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इस देश में आना साबित होना, यह सारी ऐसी घटनाएँ हैं कि इनको पूरी तरह देखने से अवश्य यह निष्कर्ष निकलता है कि नि:सन्देह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस देश में आए थे और इसी जगह मृत्यु पाए । इसके अतिरिक्त और

का शब्द मुसलमानों और इस्राईलियों में एक सांझा शब्द है और जब इस्लाम में कोई नबी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नहीं आया और न आ सकता था इसलिए कश्मीर के समस्त मुसलमान एक स्वर में यही कहते हैं कि यह नबी इस्लाम के पहले का है । हाँ इस निष्कर्ष तक वे अब तक नहीं पहुँचे कि जब नबी का शब्द सिर्फ दो ही क़ौमों के नबियों में सांझा था अर्थात मुसलमानों और बनी इस्राईल के नबियों में, और इस्लाम में तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी आ नहीं सकता तो अवश्य यही तय पाया कि वह इस्राईली नबी है क्योंकि किसी तीसरी भाषा ने कभी इस शब्द को प्रयोग नहीं किया । निस्सन्देह इस सांझा का सिर्फ दो भाषाओं और दो क़ौमों में विशिष्ट होना अनिवार्य है* ख़त्मे नुबुव्वत के कारण इस्लामी क़ौम इससे बाहर हो गई । इसलिए स्पष्टरूप से यह बात तय हो गई कि यह नबी इस्राईली नबी है। तत्पश्चात् क्रमशः ऐतिहासिक प्रमाणों से यह साबित हो

शेष हाशिया :– भी बहुत से प्रमाण हैं । अगर ख़ुदा ने चाहा तो इस पर हम एक अलग किताब लिखेंगे । (विज्ञापक)

---

* नबी का शब्द केवल दो भाषाओं से विशिष्ट है और दुनिया की किसी अन्य भाषा में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ । अर्थात एक तो इब्रानी भाषा में यह शब्द नबी आता है और दूसरे अरबी भाषा में । इसके अलावा दुनिया की अन्य सारी भाषाएँ इस शब्द से कुछ संबंध नहीं रखतीं । इसलिए यह शब्द जो यूज़ आसफ पर बोला गया शिलालेख की तरह गवाही देता है कि यह व्यक्ति या तो इस्राईली नबी है या इस्लामी नबी, मगर ख़त्म-ए-नुबुव्वत के बाद इस्लाम में कोई और नबी नहीं आ सकता । इसलिए निश्चित हुआ कि यह इस्राईली नबी है। अब जो अवधि बताई गई है उस पर पूर्णतः छानबीन और विचार करके पूर्णतः फैसला हो जाता है कि यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं और वही शहज़ादा के नाम से पुकारे गए हैं । (लेखक)

जाना कि यह नबी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से छ: सौ वर्ष पहले गुज़रा है, पहले प्रमाण को और भी विश्वस्त बना देता है और बुद्धिमानों को बड़ी दृढ़तापूर्वक इस तरफ़ ले आता है कि यह नबी हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम हैं कोई दूसरा नहीं क्योंकि वही इस्राईली नबी हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से 600 वर्ष पहले गुज़रे हैं । फिर इसके बाद इस क्रमिक बात पर ग़ौर करने से कि वह नबी शहज़ादा भी कहलाता है यह सबूत अत्यधिक स्पष्ट हो जाता है क्योंकि इस अवधि में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कोई नबी शहज़ादा के नाम से कभी मशहूर नहीं हुआ । अत: यूज़ आसफ का नाम जो यूसु के शब्द से बहुत मिलता है इन सारी विश्वसनीय बातों को और भी ठोस करता है । फिर घटनास्थल पर पहुँचने से एक और प्रमाण ज्ञात हुआ है जो कि संलग्न मानचित्र से स्पष्ट है कि इस नबी की क़ब्र दक्षिण और उत्तर बनी हुई है और ज्ञात होता है कि उत्तर की ओर सिर है और दक्षिण की ओर पैर हैं और दफ़्न करने का यह ढंग मुसलमानों और अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाइयों - अनुवादक) से विशेष है । इसके समर्थन में एक और सबूत है कि इस मक़बरा के साथ ही कुछ थोड़ी सी दूरी पर कोह-ए-सुलैमान के नाम से एक पहाड़ मशहूर है । इस नाम से भी पता चलता है कि कोई इस्राईली नबी इस जगह आया था ।*

* यह अनिवार्य नहीं कि सुलैमान से तात्पर्य सुलैमान पैग़म्बर ही हों बल्कि ज्ञात होता है कि कोई इस्राईली शासक होगा जिनके नाम से यह पहाड़ मशहूर हो गया । उस शासक का नाम सुलैमान होगा । यह यहूदियों की अब तक आदत है कि नबियों के नाम पर अब भी नाम रख लेते हैं । बहरहाल उस नाम से भी इस बात का सबूत है कि यहूदियों का एक गिरोह कश्मीर में आया था जिनके लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कश्मीर में आना ज़रूरी था - लेखक

यह बहुत बड़ी मूर्खता है कि उस शहज़ादा नबी को हिन्दू ठहराया जाए और यह ऐसी ग़लती है कि इन ज्वलंत प्रमाणों के सामने रखकर इसके रद्द की भी आवश्यकता नहीं । संस्कृत में कहीं नबी का शब्द नहीं आया बल्कि यह शब्द इब्रानी और अरबी से विशेष है और दफ़्न करना हिन्दुओं की रस्म नहीं, हिन्दू लोग तो अपने मुर्दों को जलाते हैं अत: क़ब्र की दशा भी पूरी तरह विश्वास दिलाती है कि यह नबी इस्राईली है । क़ब्र के पश्चिमी ओर एक छिद्र है, लोग कहते हैं कि इस छिद्र से मनमोहक खुशबू आती है यह छिद्र काफी बड़ा है और कब्र के अन्दर तक है । इससे समझा जाता है कि किसी बड़े उद्देश्य के लिए यह छिद्र रखा गया है । संभवत: अभिलेख के तौर पर इसमें कुछ चीज़ें दफ़्न होंगी । लोग कहते हैं कि इसमें कोई ख़ज़ाना है मगर यह विचार विश्वसनीय नहीं लगता। हाँ चूँकि क़ब्रों में इस प्रकार का छिद्र रखना किसी देश में रिवाज नहीं, इससे समझा जाता है कि इस छिद्र में कोई बहुत बड़ा रहस्य है और सैकड़ों साल से लगातार यह छिद्र चले आना यह और भी अजीब बात है । इस शहर के शिया लोग भी कहते हैं कि यह किसी नबी की क़ब्र है जो किसी देश से भ्रमण के तौर पर आया था और शहज़ादा की उपाधि से नामित था । शियों ने मुझे एक किताब भी दिखाई जिसका नाम **'ऐनुल हयात'** है । इस किताब में बहुत सा वर्णन पृष्ठ 119 पर इब्न बाबविया और किताब 'कमालुद्दीन' और 'इत्मामुन्नेमत' के हवाले से लिखा है लेकिन वे सारे व्यर्थ और झूठे क़िस्से हैं केवल इस किताब में इतनी ही सच बात है कि लेखक स्वीकार करता है कि यह नबी सय्याह (भ्रमण करने वाला) था और शहज़ादा भी, जो कश्मीर में आया था । इस शहज़ादा नबी की क़ब्र का पता यह है कि जब जामा

मस्जिद से 'बल' यमीन की दरगाह यमीन की गली में आएं तो यह पवित्र क़ब्र आगे मिलेगी । इस मक़बरे की बायीं ओर की दीवार के पीछे एक गली है और दाहिनी ओर एक पुरानी मस्जिद है । ज्ञात होता है कि बरकत के तौर पर किसी पुराने ज़माने में इस मज़ार शरीफ़ के निकट मस्जिद बनाई गई है और इस मस्जिद के साथ मुसलमानों के मकान हैं और किसी दूसरी क़ौम का नामोनिशान नहीं, और इस अल्लाह के नबी की क़ब्र के निकट दाहिने कोने में एक पत्थर रखा है जिस पर इन्सान के पाँव का निशान है । कहते हैं कि यह क़दम रसूल का है और संभवतः उस शहज़ादा नबी का यह क़दम निशान के तौर पर शेष है । इस क़ब्र पर कुछ अनसुलझे रहस्यों की दो बातें मानो स्पष्टीकरण योग्य है, एक वह छिद्र जो क़ब्र के निकट है दूसरा क़दम जो पत्थर पर ख़ुदा हुआ है। शेष सारी स्थिति मज़ार के संलग्न मानचित्र में दिखाई गई है । (समाप्त)

यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र है जो यूसु और जीज़स् या यूज़ आसफ़ के नाम से भी मशहूर हैं और कश्मीर के वयोवृद्ध लोगों की गवाही के अनुसार लगभग 1900 वर्ष से यह क़ब्र श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में है ।

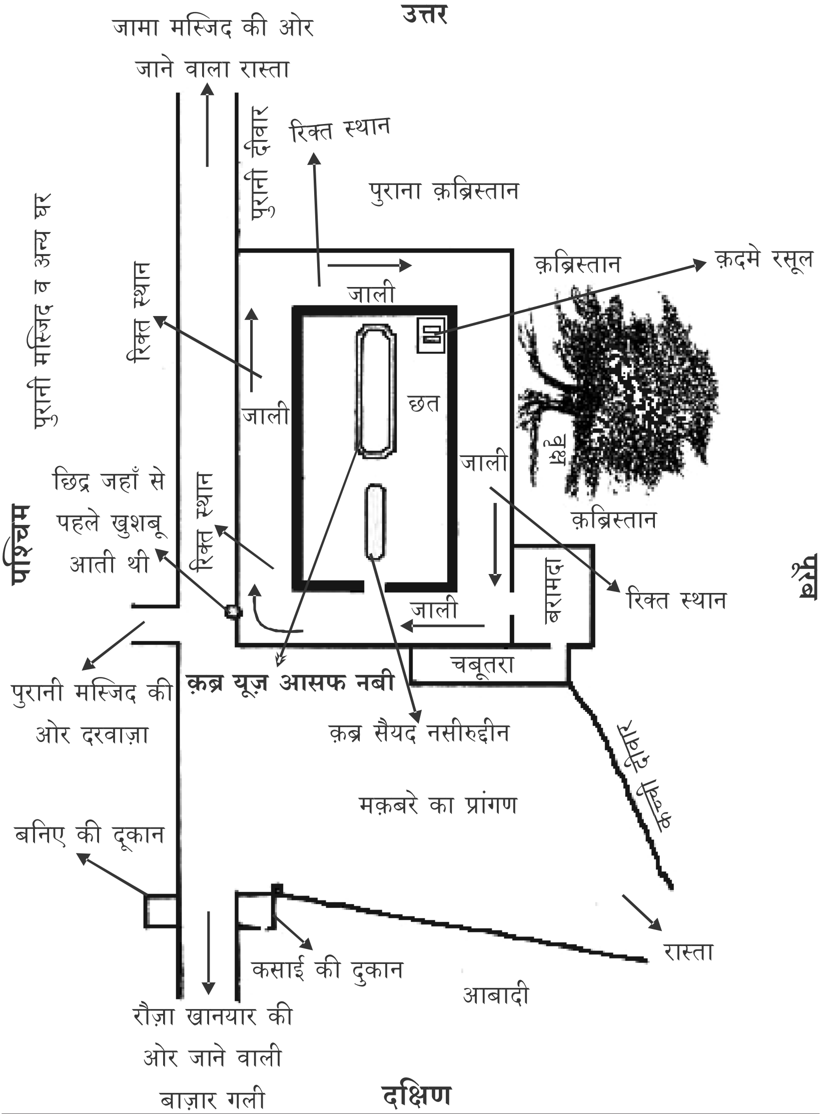

पुस्तक की समाप्ति

ख़ुदा तआला की कृपा से विरोधियों को लज्जित करने के लिए और इस लेखक की सच्चाई ज़ाहिर करने के लिए यह बात साबित हो गई है कि जो श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में यूज़ आसफ़ के नाम से क़ब्र मौजूद है वह वस्तुतः निःसन्देह तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र है । मरहम-ए-ईसा, जिस पर चिकित्सा की हज़ारों किताबें बल्कि उससे अधिक गवाही दे रही हैं इस बात का पहला सबूत है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने सलीब से मुक्ति पाई थी । वह सलीब पर कदापि नहीं मरे । इस मरहम की व्याख्या में स्पष्ट लेखों में चिकित्सकों ने लिखा है कि ''यह मरहम चोट, गर्भपात और हर प्रकार के घाव के लिए बनाइ जाता है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की चोटों और घावों के लिए तैयार हुआ था अर्थात उन घावों के लिए जो आपके हाथों और पैरों पर थे ।'' इस मरहम के सबूत में मेरे पास वे कई चिकित्सा की किताबें भी हैं जो लगभग 700 वर्ष पहले की क़लम से लिखी हुई हैं । ये चिकित्सक केवल मुसलमान नहीं हैं बल्कि ईसाई, यहूदी और मजूसी भी हैं जिनकी किताबें अब तक मौजूद हैं । रोम के बादशाह की लाइब्रेरी में भी रोमन भाषा में एक क़राबादीन* थी और सलीब की घटना के 200 वर्ष बीतने से पहले ही अधिकतर किताबें दुनिया में फैल चुकी थीं । अतः इस विषय की बुनियाद कि हज़रत मसीह की मृत्यु सलीब पर नहीं हुई सर्वप्रथम स्वयं इन्जीलों से पैदा हुई है जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं और फिर मरहम-ए-ईसा ने ऐतिहासिक और वैज्ञानिक खोज के रूप में इस सबूत को

* चिकित्सा की वह किताब जिसमें यूनानी आयुर्वेद संबंधी दवाएँ और नुस्खे लिखे होते हैं - अनुवादक

दिखाया । तत्पश्चात् उस इन्जील ने जो अभी निकट ही में तिब्बत से मिली है स्पष्ट गवाही दी, कि हज़रत ईसा अवश्य हिन्दुस्तान के इलाक़ा में आए हैं । उसके बाद और बहुत सी किताबों से इस घटना का पता लगा और ''तारीख कश्मीर आज़मी'' जो लगभग 200 वर्ष की रचना है उसके पृष्ठ 82 में लिखा है कि ''सैयद नसीरुद्दीन की क़ब्र के पास जो दूसरी क़ब्र है उसके बारे में अधिकतर लोगों का कहना है कि यह एक पैग़म्बर की क़ब्र है ।'' फिर यही इतिहासकार उसी पृष्ठ में लिखता है कि ''एक शहज़ादा कश्मीर में किसी और देश से आया था और पाकीज़गी, तक़्वा, तपस्या और इबादत में वह महान स्तर पर था । वही खुदा की ओर से नबी हुआ और कश्मीर में आकर कश्मीरियों में प्रचार करने लग गया, जिसका नाम यूज़ आसफ़ है और अधिकतर आध्यात्म विशेषत: मुल्ला इनायतुल्ला जो लेखक के पीर हैं कह गए हैं कि इस क़ब्र से नुबुव्वत की बरकतें ज़ाहिर हो रही हैं।'' तारीख आज़मी की यह पंक्तियाँ फ़ारसी में है जिसका अनुवाद किया गया और मुस्लिम ऐंग्लो ओरियन्टल कालेज मैगज़ीन सितम्बर 1892 ई. और अक्टूबर 1896 ई. ने किताब शहज़ादा यूज़ आसफ़ की रेव्यू के आयोजन पर जो मिर्ज़ा सफ़दर अली साहिब सर्जन फ़ौज सरकार-ए-निज़ाम ने लिखी है - लिखा है कि :-

यूज़ आसफ़ के मशहूर वर्णन में जो एशिया और यूरोप में प्रसिद्ध हो चुका है पादरियों ने कुछ मिलावट कर दी है अर्थात् यूज़ आसफ़ की जीवनी में जो हज़रत मसीह की शिक्षा और शिष्टाचार से बहुत मिलती जुलती है । सम्भवत: ये इबारतें पादरियों ने अपनी ओर से बढ़ा दी हैं ।'' लेकिन यह विचार पूर्णत: अनभिज्ञता के कारण है बल्कि पादरियों को उस समय यूज़ आसफ़ की जीवनी मिली है जबकि उससे पहले समस्त

हिन्दुस्तान और कश्मीर में मशहूर हो चुके थे और इस देश की पुरानी किताबों में उनका वर्णन है और अब तक वे किताबें मौजूद हैं । फिर पादरियों को रद्दोबदल के लिए क्या गुंजाइश थी ? हाँ पादरियों का यह विचार कि शायद हज़रत मसीह के हवारी इस देश में आए होंगे और ये लेख यूज़ आसफ की जीवनी में, ये उनके लेख हैं यह पूर्णत: ग़लत है बल्कि हम साबित कर चुके हैं कि यूज़ आसफ़ हज़रत यूशु का नाम है जिसमें भाषा के बदलाव के कारण कुछ परिवर्तन हो गया है । अब भी कई कश्मीरी यूज़ आसफ़ के बजाय ईसा साहिब ही कहते हैं जैसा कि लिखा गया ।

सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया ।

घोषणापत्र के पहले पृष्ठ हाशिया से संबंधित

तिथि 30 नवम्बर सन् 1898 ई.

तुरन्त अपमान

ذلتِ صادق مجو اے بے تمیز
زیں رہے ہرگز نخواہی شد عزیز

(अनुवाद :- हे उद्दंड ! सच्चे को शर्मिन्दा करने की कोशिश मत कर तू इस तरीक़े से कभी सम्मान नहीं पाएगा - अनुवादक।)

शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी बार-बार यही कहते रहे कि ''हम सच्चे और झूठे के परखने के लिए मुबाहला* चाहते हैं और इस्लाम धर्म में मुबाहला की परम्परा भी पाई जाती है । लेकिन इसके साथ यह भी निवेदन है कि अगर हम झूठे ठहरें तो तुरन्त अज़ाब (प्रकोप) हम पर आए ।'' इसके जवाब में मैंने 21 नवम्बर सन् 1898 ई. के घोषणापत्र में विस्तारपूर्वक लिख दिया है कि मुबाहला में तुरन्त अज़ाब नाज़िल होना पूर्णत: ख़ुदा तआला के विधान के विपरीत है । हदीसों में अब तक **لما حال الحول (लमा हालल् हौल)** का शब्द मौजूद है जिसमें पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि नजरान के ईसाइयों ने डरकर मुबाहला से मुँह फेर लिया और अगर वे मुझसे मुबाहला करते तो अभी एक साल बीतने न पाता कि वे मिटा दिए जाते । अत: इस हदीस से मुबाहला के लिए एक साल तक की शर्त हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह से निकली है और मुसलमानों के लिए

* एक-दूसरे को अभिशाप देकर ख़ुदा से निर्णय चाहना - अनुवादक ।

क़यामत (प्रलय) तक यही तरीका जारी है कि हदीस के शब्द को सामने रखकर मुबाहला की समय-सीमा को एक साल से कम नहीं करना चाहिए । बल्कि ख़ुदा के वली (ऋषि) और आध्यात्मज्ञानी जो धरती पर अल्लाह के द्योतक हैं वे हमेशा के लिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारी होकर इस चमत्कार के भी उत्तराधिकारी हैं कि अगर कोई ईसाई जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा मानता है* या कोई और द्वैतवादी जो किसी और इन्सान को ख़ुदा ख़याल करता है उन से इस विषय में मुबाहला करे तो ख़ुदा तआला उस समय-सीमा में या किसी और समय-सीमा में जो ईश्वरीय प्रकटन से मुल्हम को ज्ञात हो, प्रतिपक्षी को अपने प्रभुत्व और सच्चाई के प्रमाण के लिए कोई आसमानी निशान दिखाएगा और यह इस्लाम की सच्चाई की लिए हमेशा के निशान हैं जिनका मुक़ाबला कोई क़ौम नहीं कर सकती । अतः एक वर्ष की समय-सीमा जो डराने की भविष्यवाणियों में एक छोटी सी अवधि है, स्पष्ट आयतों से साबित है । तुरन्त अज़ाब चाहने की यह हठ वही करेगा जिसको हदीस के ज्ञान से पूर्ण अनभिज्ञता है । ऐसा व्यक्ति मौलवियत की शान को दाग़ लगाता है । मैंने तो बटालवी साहिब को समझाने के लिए यह भी लिख दिया था कि मुबाहला में केवल एक पक्ष से बद्दुआ

---

* इन्जील से साबित है कि चमत्कार दिखलाने की बरकत हज़रत मसीह के ज़माने में ईसाई धर्म में पाई जाती थी बल्कि चमत्कार दिखलाना सच्चे ईसाई की निशानी थी लेकिन जब से ईसाइयों ने इन्सान को ख़ुदा बनाया और सच्चे रसूल को झुठलाया तब से ये सारी बरकतें उनसे खत्म हो गईं और दूसरे मुर्दा धर्मों की भाँति यह धर्म भी मुर्दा हो गया। इसी कारण से हमारे मुक़ाबले पर कोई ईसाई आसमानी निशान दिखाने के लिए खड़ा नहीं हो सकता । (लेखक)

(अभिशाप) नहीं होती बल्कि दोनों ओर से बद्दुआ होती है । अत: अगर एक व्यक्ति मोमिन और मुसलमान कहलाता है और दूसरे व्यक्ति को काफिर, दज्जाल, अधर्मी, धिक्कृत और मुर्तद (धर्मत्यागी) कहकर इस्लाम से खारिज करता है जैसा कि मियाँ मुहम्मद हुसैन बटालवी है तो उसको किसने मना किया है कि वह तुरन्त अज़ाब (प्रकोप) आने के लिए बद् दुआ करे । मगर मुल्हम (अर्थात ईश्वाणी पाने वाला) उसकी इच्छा का अनुसरण नहीं कर सकता । मुल्हम तो खुदा तआला के आदेश का पालन करेगा लेकिन 21 नवम्बर सन् 1898 ई. का हमारा घोषणापत्र जो मुबाहला के रूप में शेख मुहम्मद हुसैन और उसके दो हमराज़ मित्रों के मुक़ाबले पर निकला है । वह **केवल एक दुआ** है । जिसका तात्पर्य केवल यह है कि झूठे को खुदा तआला की ओर से रुसवाई पहुँचे । इसका यह अर्थ **नहीं** है कि झूठा **मारा जाए** या किसी कोठे की छत से गिरे। चूँकि मुहम्मद हुसैन और जटली और तिब्बती ने मनगढ़त झूठी बातों, ला'नतों और गालियों से केवल मेरी रुसवाई चाही है इसलिए मैंने खुदा तआला से यही चाहा है कि अगर वास्तव में मैं लज्जा के योग्य और झूठा, दज्जाल और ला'नती हूँ जैसा कि मुहम्मद हुसैन ने इस प्रकार की गालियों से अपने अख़बार भर दिए हैं और बार-बार मेरा दिल दु:खाया है तो और भी लज्जित किया जाऊँ और शेख मुहम्मद हुसैन को खुदा तआला की ओर से प्रतिष्ठा मिले और बड़े-बड़े पद पाए लेकिन अगर मैं झूठा और दज्जाल और ला'नती नहीं हूँ तो खुदा तआला के दरबार में मेरी **फरियाद** है कि मुझे शर्मिन्दा करने वाले मुहम्मद हुसैन और जटली और तिब्बती को खुदा तआला की ओर से शर्मिन्दगी पहुँचे । अतएव मैं खुदा तआला से अत्याचारी और झूठे की शर्मिन्दगी चाहता हूँ चाहे हम दोनों में से कोई भी

हो और उस पर आमीन (तथास्तु) कहता हूँ । मुझे यह इल्हाम हुआ है कि इन दोनों पक्षों में से जो पक्ष वास्तव में ख़ुदा तआला की दृष्टि में अत्याचारी और झूठा है उसको ख़ुदा **शर्मिन्दा** करेगा और यह घटना 15 जनवरी सन् 1900 ई. तक पूरी हो जाएगी । ख़ुदा तआला भली भाँति जानता है कि उसकी दृष्टि में कौन अत्याचारी और झूठा है । अगर इस अवधि में मेरी शर्मिन्दगी ज़ाहिर हो गई तो नि:सन्देह मेरा झूठा और अत्याचारी और दज्जाल होना साबित हो जाएगा और इस तरह से क़ौम का प्रतिदिन का झगड़ा खत्म हो जाएगा लेकिन यदि शेख मुहम्मद हुसैन और जाफ़र जटली और तिब्बती पर आसमान से कोई शर्मिन्दगी आए तो वह इस बात पर ठोस सबूत होगा कि उन्होंने गालियाँ देने और दज्जाल और ला'नती और झूठा कहने में मुझ पर अत्याचार किया है, लेकिन शेख मुहम्मद हुसैन ने मेरे अरबी इल्हाम के वाक्य اَتَعْجَبُ لِامرِی (अ'ता'जबो-लिअमरी) पर ऐतिराज़ करके जो 21 नवम्बर 1898 ई. के घोषणापत्र में हैं अपने लिए शर्मिन्दगी का दरवाज़ा स्वयं खोला है । मानो अपने हाथों से शीघ्र शर्मिन्दगी पाने की इच्छा को पूरा किया । बल्कि शीघ्र शर्मिन्दगी को तो 15 दिसम्बर सन् 1898 ई. से पूरा होना चाहिए था । इन्होंने उससे पहले ही एक क़ाबिले शर्म शर्मिन्दगी उठाई है जिसको तुरन्त नहीं बल्कि अग्रिम शर्मिन्दगी कहना चाहिए और वह यह है कि उपरोक्त शेख ने इल्हाम को देखकर एक अवसर पर शेख़ ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब के सामने जो उसी शहर के वासी हैं मेरे इस घोषणापत्र को देखकर यह ऐतिराज़ किया कि घोषणापत्र में लिखे इल्हाम में जो यह वाक्य है कि اَتَعْجَبُ لِامرِی (अ ता'जबो लिअमरी) इसमें व्याकरण की त्रुटि है और ख़ुदा की वाणी ग़लत नहीं हो सकती, बल्कि

اَتَعْجَبُ مِن اَمْرِی (अ ता'जबो मिन् अमरी) होना चाहिए । यह वह ऐतिराज़ है जिससे शेख अविलाब लज्जित हुआ क्योंकि अरब के मशहूर कवियों बल्कि ज़माना जाहिलियत के बड़े-बड़े कवियों की रचनाओं से हमने साबित कर दिया है कि अजब शब्द का संबंधकारक लाम् (ل) भी हुआ करता है । अब स्पष्ट है कि शेख साहिब ने यह ग़लत ऐतिराज़ करके जो उनकी पूरी अनभिज्ञता और मूर्खता की ओर इशारा करता है, विद्वानों के सामने अपना सबसे बड़ा छिद्रान्वेषण अपने हाथों कराया है और हर एक दुश्मन और दोस्त पर साबित कर दिया है कि वह केवल नाम के मौलवी हैं और अरबी भाषा के ज्ञानों से अनभिज्ञ हैं और ऐसे व्यक्ति के लिए जो मौलवी कहलाता है इससे बढ़कर और कोई शर्मिन्दगी नहीं । वह वास्तव में मौलिवयत की विशेषताओं से वंचित है । अफ़सोस इस व्यक्ति को अब तक पता नहीं कि इस क्रिया (verb) का संबंधकारक अर्थात अ' ज' ब का कभी मिन् (مِنْ) के शब्द से आता है और कभी लाम् (ل) से । एक बच्चा जिसने व्याकरण की प्रारंभिक पुस्तक हिदायतुन्नहव का अध्ययन किया हो वह भी जानता है कि वाक्य-विश्लेषकों ने लाम् (ل) शब्द का भी संबंधकारक बयान किया है जिस तरह कि मिन् शब्द का बयान किया है । अत: इस संबंधकारक के प्रमाण में जो दोहे प्रस्तुत किए गए हैं उनमें से एक यह भी है :-

عجبت لمولود لیس له اب   ومن ذی ولد لیس له ابوان

कवि ने इस दोहे में दोनों संबंधकारकों का वर्णन कर दिया है लाम शब्द का भी और मिन् शब्द का भी । इसके अतिरिक्त दीवान हमास: के पृष्ठ 9 और 390, 411, 475, 511 में जो सरकारी कालेजों में लगा है जिसकी स्पष्टता और अलंकारिकता

प्रमाणित और प्रसिद्ध है । जिसमें से जाफ़र पुत्र उल्बा और दूसरे कवियों के पाँच दोहे लिखे गए हैं जिनमें उन अरब के मशहूर कवियों ने अरबी शब्द अ ज ब का संबंधकारक लाम शब्द प्रयोग किया है और वे निम्नलिखित हैं :-

(۱) عجبتُ لمسراها وانّی تخلَّصَت　　الیَّ و باب السجنِ دونی مُغلق

(۲)عجبت لسعی الدهر بینی وبینها　　فلمّا انقضٰی مابیننا سکن الدھر

(۳) عجبتُ لبُرئی منک یاعزّبعد ما　　عمرت زمانا منکِ غیر صحیح

(۴) عجبت لعبدان ھجونی سفاھة　　ان اصطبحوا من شائھم وتقیّلوا

(۵) عجبًا لاحمد والعجائب جُمّة　　انّٰی یلوم علی الزمان تبذّلی

इससे बढ़कर जो हदीस मिश्कात किताबुल ईमान पृष्ठ 3 में इस्लाम के अर्थ के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वर्णित है और हदीस की किताब बुखारी और मुस्लिम दोनों में पाई जाती है । उसमें भी अ ज ब शब्द का संबंधकारक लाम् शब्द बयान हुआ है । हदीस के शब्द ये हैं :- **عجبنا له یسئله و یُصَدِّقُهٗ** देखो इस जगह अरबी शब्द अजब्ना का संबंधकारक मिन् नहीं बल्कि लाम् शब्द लिखा है और अजब्ना मिनहो नहीं कहा बल्कि अजब्ना लहू कहा है । अब बटालवी साहिब बताएं कि विद्वानों के निकट एक मौलवी कहलाने वाले की यही शर्मिन्दगी है या इसका कोई और नाम है ? और यह भी फ़त्वा दें कि इस शर्मिन्दगी को तुरन्त शर्मिन्दगी कहना चाहिए या कोई और नाम रखना चाहिए । मन में द्वेष रखने वाले शेख ने अपने द्वेष के आवेग से बहुत जल्द अपने आप को इस दोहे का पात्र बना लिया कि :-

مرا خواندی و خود بدام آمدی　　نظر پختہ ترکن کہ خام آمدی

(अनुवाद :- तूने मुझे मुक़ाबला के लिए ललकारा और स्वयं ही जाल में फँस गया । अपनी सोच को और मज़बूत कर क्योंकि तू अभी कच्चा है - अनुवादक ।)

देखना चाहिए कि मेरी शर्मिन्दगी की चाहत में कैसी अपनी शर्मिन्दगी प्रकट कर दी । जिस व्यक्ति को मिश्कात शरीफ़ की पहली हदीस का भी ज्ञान नहीं और जो हदीस इस्लाम के परिचय की बुनियाद है उसके शब्द भी ज्ञात नहीं और जो विषय बुखारी और मुस्लिम की हदीस में स्पष्टरूप से वर्णित है उससे अब तक बूढ़े होने की हालत में भी जानकारी नहीं । क्या एक न्यायकर्ता ऐसे व्यक्ति का नाम मौलवी रख सकता है ? अत: जिस व्यक्ति के अरबी भाषा के ज्ञान का यह हाल है और हदीस की जानकारी की यह वास्तविकता है कि मिश्कात की पहली हदीस के शब्दों से ही अनभिज्ञता है उसका हाल नि:सन्देह रहम के लायक़ है और उसकी शर्मिन्दगी पर्दापोशी की कोशिशों से भी बढ़कर है और उसकी यह शर्मिन्दगी नि:सन्देह तुरंत शर्मिन्दगी है जो निशान के तौर पर उसकी माँग के अनुसार प्रकट हुई । उसने अपने मुँह से तुरंत शर्मिन्दगी और रुसवाई माँगी, खुदा ने तुरन्त शर्मिन्दगी और रुसवाई दिखलाई ।

हम लिख चुके हैं कि इस इल्हाम का संबंध किसी की मौत या टांग टूटने से नहीं । यह केवल झूठे की शर्मिन्दगी ज़ाहिर करने के लिए है । इससे पहले कि खुदा तआला का कोई और बड़ा निशान शर्मिन्दगी ज़ाहिर करने के लिए प्रकट हो, यह शर्मिन्दगी भी झूठे के लिए ख़ुदा तआला के हाथ का एक कोड़ा है । इल्हाम अ ता'जबो लिअमरी में वस्तुत: यह एक रहस्य छुपा हुआ था कि यह इल्हाम मुहम्मद हुसैन के लिए एक रहस्यमय भविष्यवाणी थी जिसमें संकेत के तौर पर यह बयान था कि मुहम्मद हुसैन वाक्य अ ता'जबो लिअमरी पर ऐतराज़ करेगा और

उसका यह आशय है कि हे मुहम्मद हुसैन क्या तू लिअमरी के शब्द पर आश्चर्य करता है और मेरे इस इल्हाम को ग़लत ठहराता है और उसका संबंधकारक मिन् शब्द बताता है। देख मैं तुझ पर साबित करूँगा कि मैं अनुरागियों के साथ हूँ और तेरी शर्मिन्दगी ज़ाहिर करूँगा । अतएव वही शर्मिन्दगी ज़ाहिर हुई और इसी पर ख़त्म नहीं है क्योंकि मुहम्मद हुसैन और उसके मित्रगण इस रुसवाई और शर्मिन्दगी को हलवा की तरह हज़म् कर जाएँगे या माँ के दूध की तरह पी जाएँगे, इसलिए वह रुसवाई और शर्मिन्दगी जो झूठे और अत्याचारी के लिए आसमान पर तैयार है वह इससे बढ़कर है । ख़ुदा तआला ने मुझे कहा है कि جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا* अत: यदि मैं अकारण शर्मिन्दा किया गया हूँ तो ख़ुदा के उस शर्मिन्दा करने वाले निशान का उम्मीदवार हूँ जो झूठे, अत्याचारी, आरोप लगाने वाले और दज्जाल को शर्मिन्दा करने के बारे में है, और अगर मैं ही ऐसा हूँ तो शर्मिन्दा हूँगा अन्यथा इन दोनों पक्षों में से जो अत्याचारी और झूठा होगा वह उस शर्मिन्दगी का मज़ा चखेगा । इस ज्ञान संबंधी रुसवाई के अलावा मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह को एक और भी तुरत रुसवाई मिली जो सच्ची घटनाओं से सिद्ध हो गई है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम न सलीब पर मरे और न आसमान पर चढ़े बल्कि यहूदियों की क़त्ल की इच्छा से छुटकारा पाकर हिन्दुस्तान में आए और अन्तत: एक सौ बीस (120) वर्ष की आयु में श्रीनगर कश्मीर में उनकी मृत्यु हुई । अतएव मुहम्मद हुसैन इत्यादि के लिए यह बहुत बड़ा शोक और बहुत बड़ा अपमान है । इसी से

* अर्थात बुराई का बदला उसी के बराबर है - अनुवादक ।